ग्राम विकास नव युवक मण्डल लापोडिया

टेलीफोन 0141–2723732, मोबाइल नं. 9928825503

वेब – www.gvnml.org ईमेल– gvnml@gvnml.org

संग्राम सिह
अध्यक्ष

लक्ष्मण सिह
सचिव

जगवीर सिह
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

“धरती माँ ”

प्रकृति ही ईश्वर है।

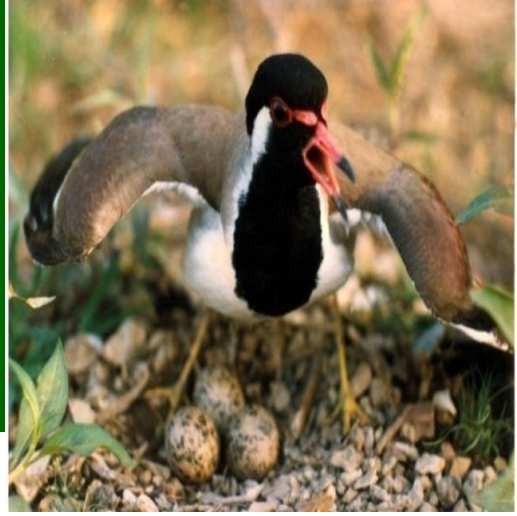

पेड लग रहे है, पत्ते गिर रहे है।

घास आ रहा है, गाये चर रही है।

गोबर हो रहा है, मिटटी बन रही है।

मिटटी पानी हरियाली से जीवन चल रहा है।

इस धरा में ही वापस समा रहा है।

इस चक्र में हम सब लग रहे है।

धरती से कोई बड़ा नहीं –

नभ से कोई उंचा नही।

गोचर

गोचर

अतिक्रमण

भू–क्षरण

खनन

पलायन एक बड़ी समस्या

चराई के लिए पलायन

रोजगार के लिए पलायन

गोचर

उजड चुके गौचर को फिर से हरा-भरा करने का दृढ संकल्प

चौका सिस्टम

गोचर

Outline of CHAUKA SYSTEM

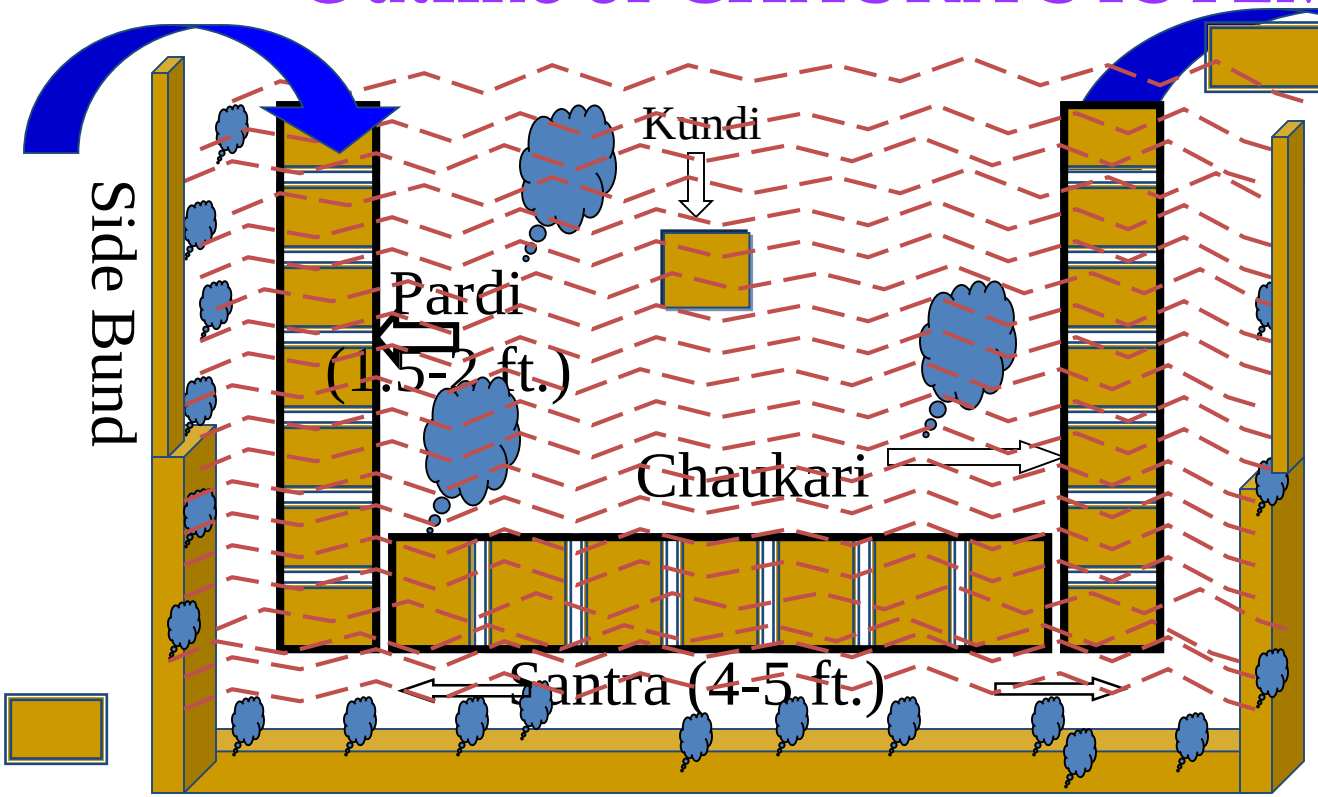

Side bund -1
(Top Width – 0.5 ft. , Bottom Width – 4 ft. and height – 1.5 ft.)

Side bund -2
(Top Width – 1ft. , Bottom Width – 6ft. and height - 2.5 ft.)

Main bund
(Top Width – 1ft. , Bottom Width – 6ft. and height - 2.5 ft.)

Chaukari outside for extra earth required at corners

जमीन के अनुरूप - चौका के स्वरूप

गोचर

For undulating land

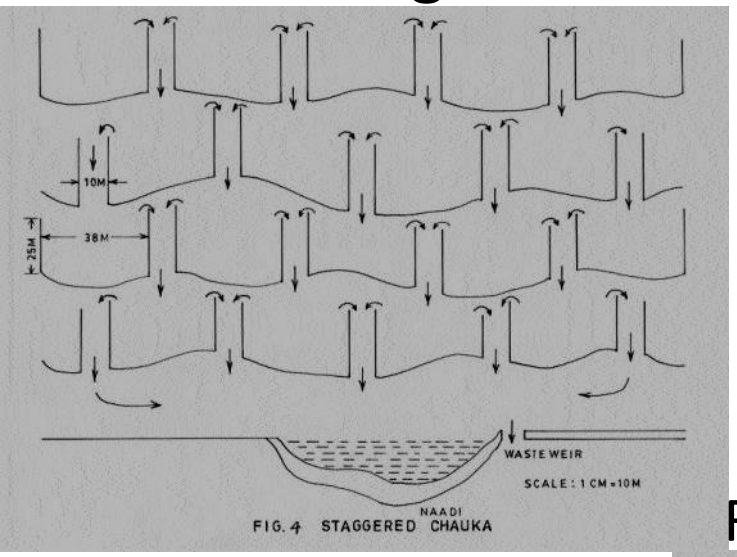

FIG. 4 STAGGERED CHAUKA

For minimum slope land

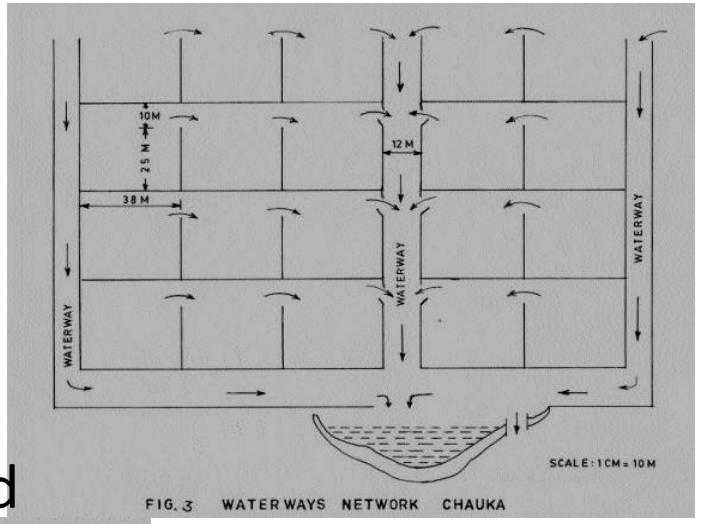

FIG. 3 WATER WAYS NETWORK CHAUKA

For even slope land

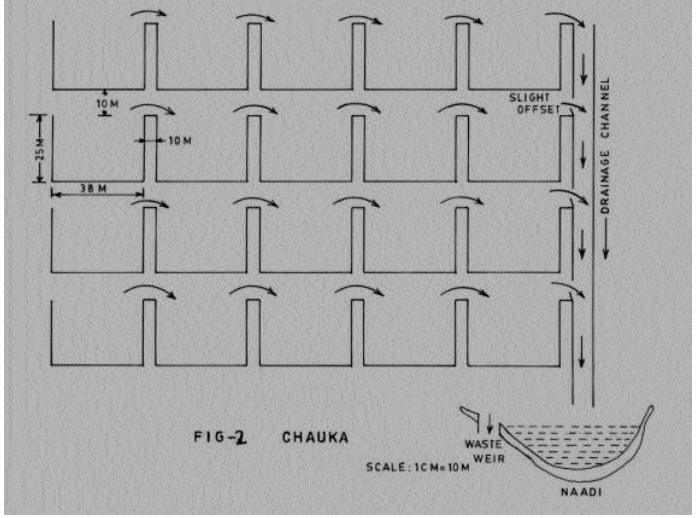

FIG-2 CHAUKA

गोचर

गोचर ने संवारा जीवन

गिर नस्ल की गाय को बढ़ावा मिल रहा है जो एक दिन में 14 लीटर तक दूध देती है।

प्रत्येक परिवार 10,000 से 50,000 रू मासिक मुल्य का दूध देते है।

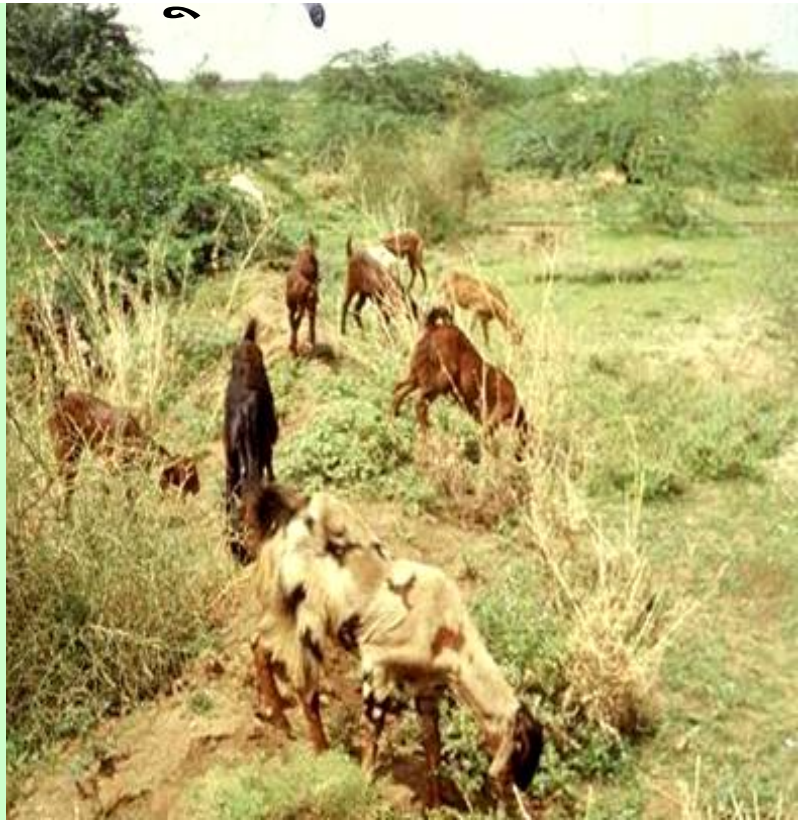

- मानव व पशु पलायन अब नही होता है।
- भेड बकरियो के पालन में 348 प्रतिशत वृद्वि है।
- चौका प्रणाली से विकसित चारागाह से परिवार की कुल आय में 39 प्रतिशत का योगदान है।

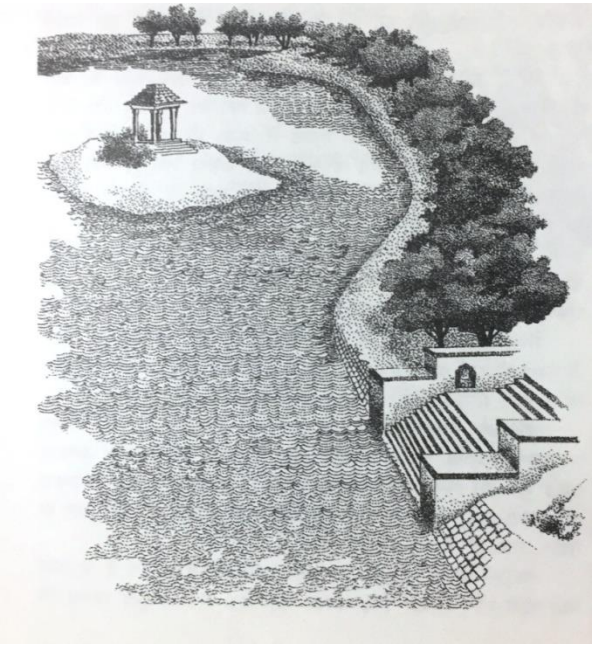

जीवन और तालाब

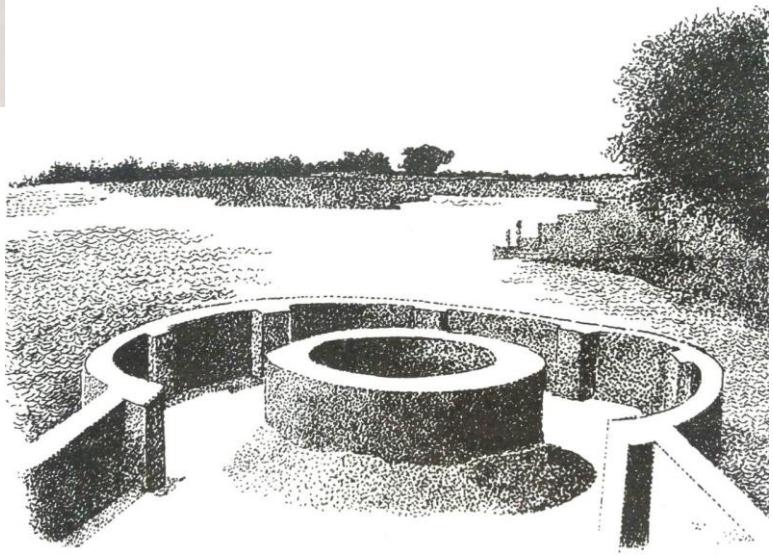

हमारे अपने सागर

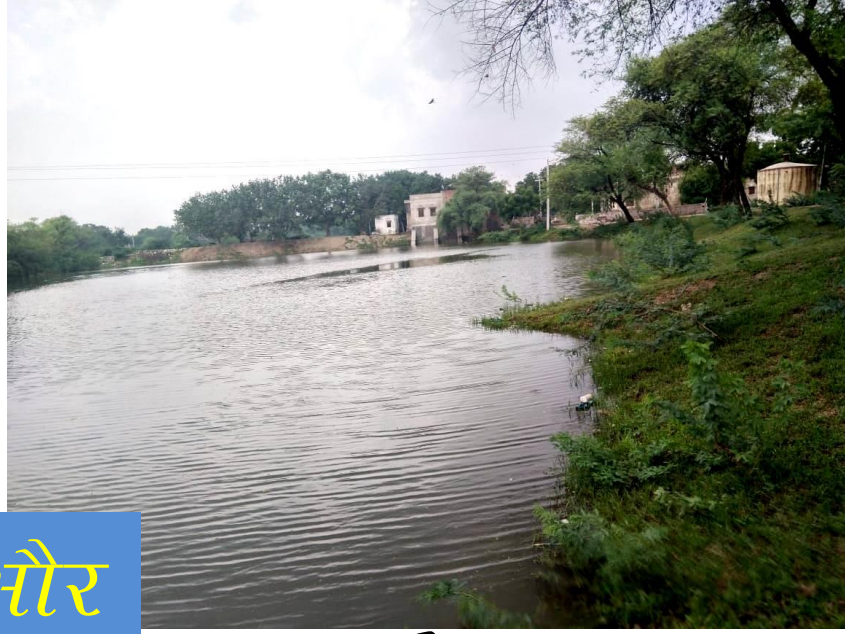

जीवन और तालाब

फूल सागर

देव सागर

अन्न सागर

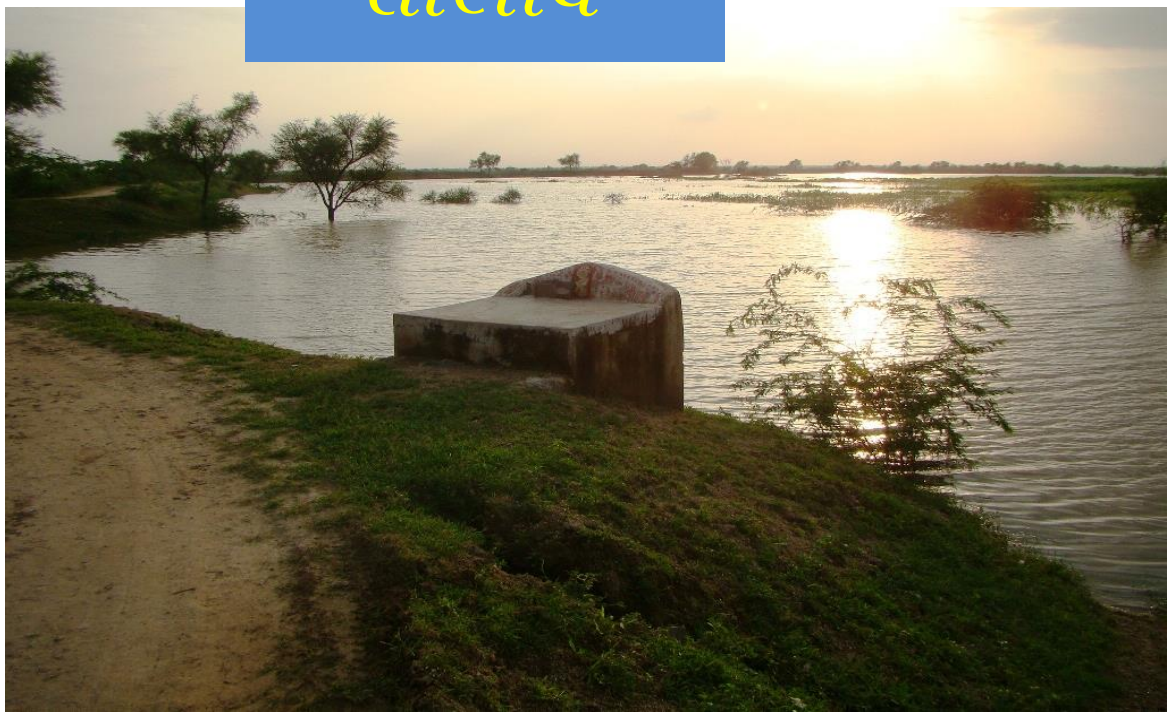

जीवन और तालाब

जीवनदायी नाड़ियां

तीन धाम नाड़ी

जंगल हॉल

एक तालाब से दुसरे तालाब को जाता हुआ पानी

जीवन और तालाब

जीवन और तालाब

वन्य जीवों व मवेशियों के लिये पेयजल

पेयजल स्रोत – जल होज (रेम्प वेल)

इन्सानों की प्यास बुझाता वर्षा जल संग्रहण टांका

जीवन और तालाब

फसलों की प्यास बुझाता – खेत टांका

जल उपलब्धता व गुणवत्ता में हुआ सुधार

जीवन और तालाब

पेयजल गुणवत्ता के मात्रक	पुरानी स्थिती	आज की स्थिती
फ्लोराइड (पी पी एम)	2.1	0.95
नाईट्रेट (पी पी एम)	30.5	17.5
अम्लीयता/क्षरीयता (pH)	8.73	8.0

जनसत्ता

प्रभात नई दिल्ली : मंगलवार, २२ मई, २००१ रु. २.०० (१० पेज) दिल्ली और कलकत्ता से प्रकाशित

सरकारी टैंकर का मोहताज नहीं है लापोरिया

प्राकृत कृषि
GVNML [NATURAL AGARICULTURE]
ऐसी कृषि जिसमें जीवों की हत्या नही संरक्षण होता है।
ऐसी कृषि जिसमें पेड़ो को हटाया नही लगाया जाता है।
प्रकृति के साथ जिये, विरूद्ध नही।

प्रकृती और खेती

वर्षा जल संग्रहण से लघु सिंचाई

प्रकृती और खेती

प्रकृती और खेती

लापोडिया : बाळा (छोटी नदी) में प्रत्येक दो किलोमीटर में छोटे–छोटे एनीकट बनने से नदी सदाबहार रहती है।

प्रकृती और खेती

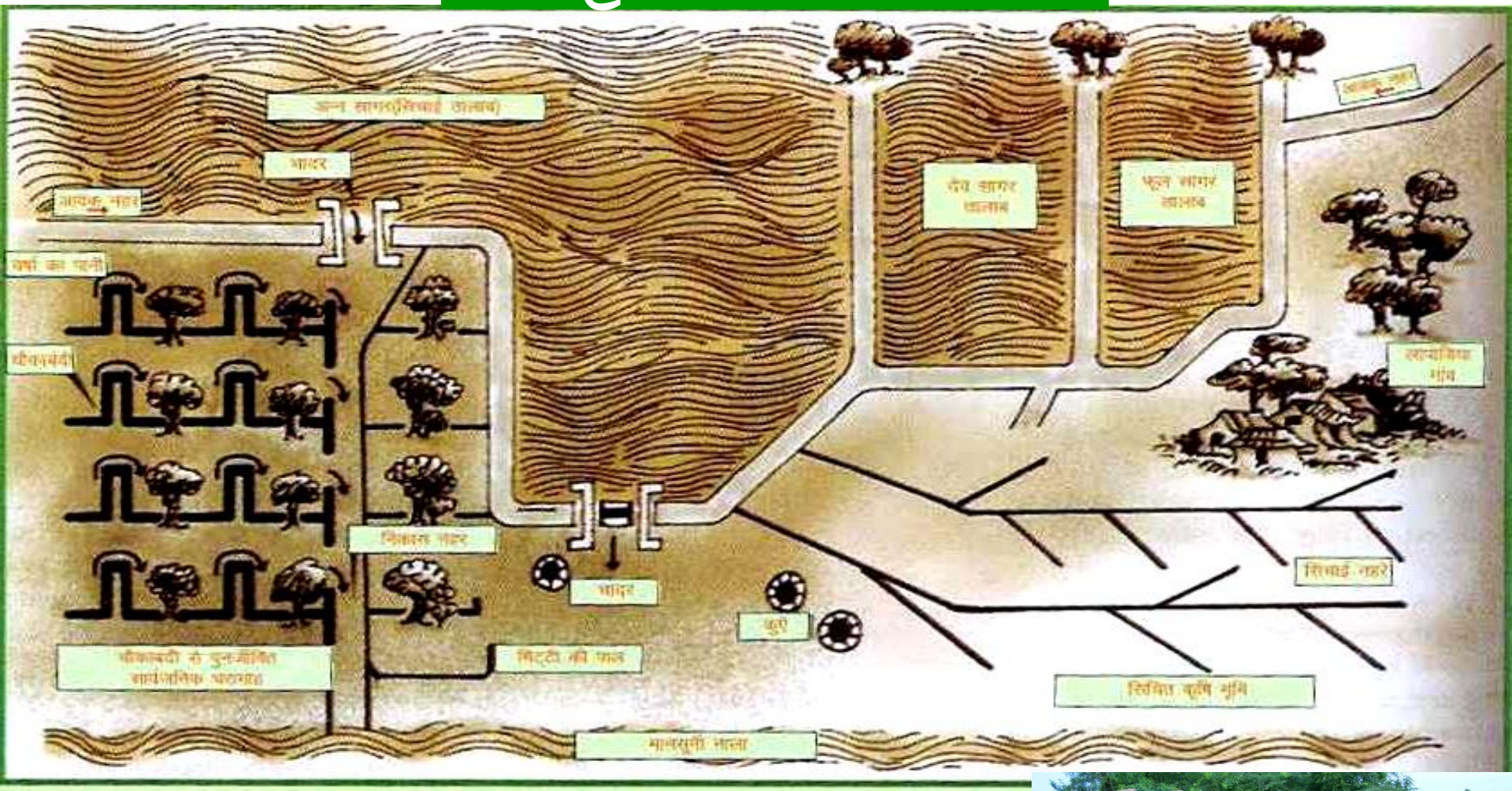

वर्षा जल के सहेजने से
भू–जल से भरपुर हुआ क्षेत्र

प्रकृती और खेती

लापोड़िया : बारानी खेती से सम्पन्न खेत, बगेर भुजल निकाले खेती

प्रकृती और खेती

लापोडिया : गूगल मेप से लिया सदाबहार बाळा (छोटी नदी) का चित्र

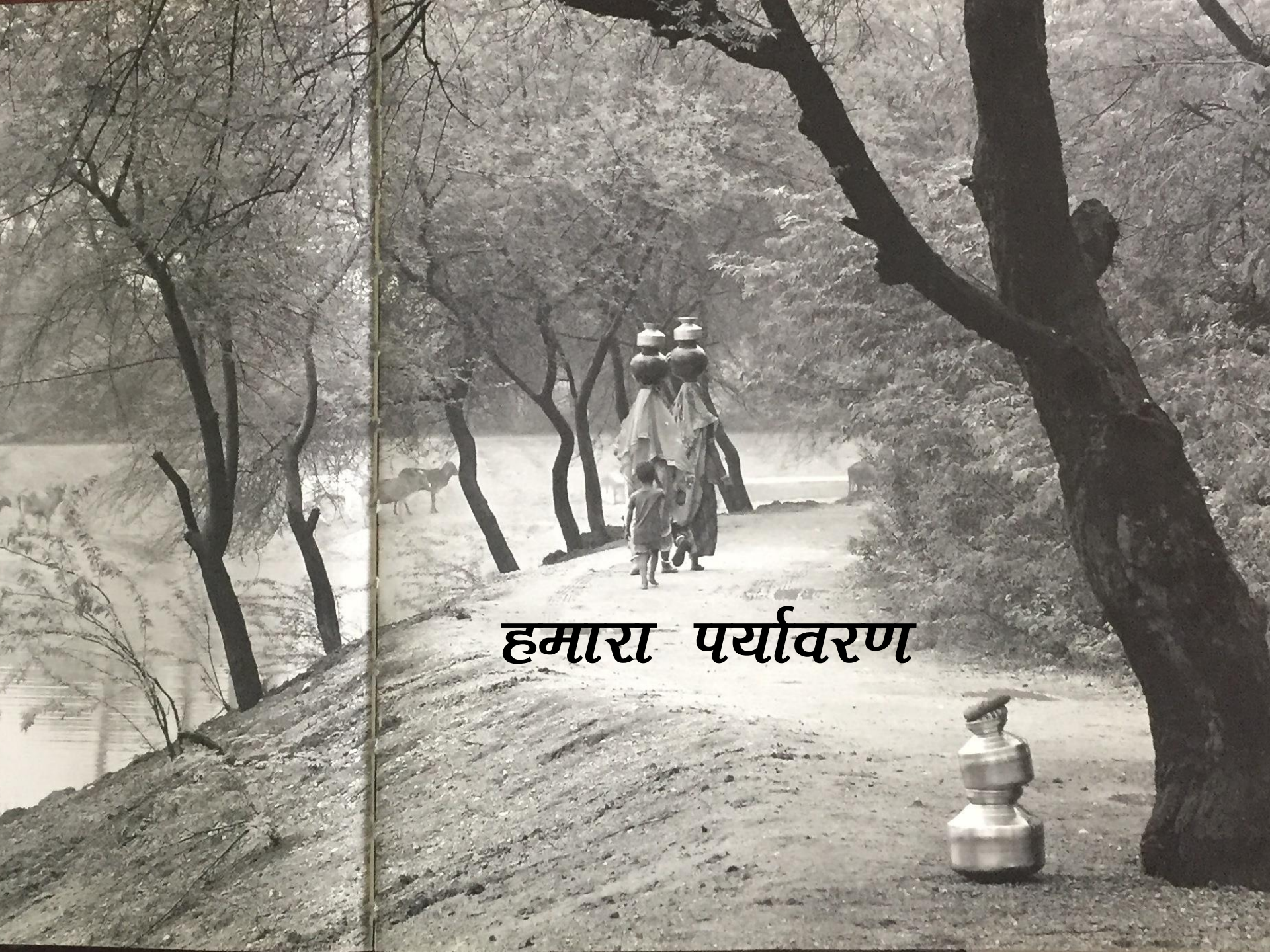
हमारा पर्यावरण

वन्य जीव संरक्षित क्षेत्र
यह निजी क्षेत्र है। परन्तु यहां वन्य जीव पूर्ण रूप से सुरक्षित है। कोई तेज आवाज नही, कोई शिकार नही, कोई कीटनाशक या जीवघातक प्राणाली नही अपनायी जाती है। इसे आप भी शुरू करे।

एक खुला चिडियाघर
इस गोचर मे वन्य जीवो को सताते नही है, मारते नही है। पेड़ झाडिया नही काटते है। अतिक्रमण भी नही करते है। ऐसा कोई करता है तो उसे सजा मिलती है।
ग्राम- लापोडिया दूदू जयपुर

हमारा पर्यावरण

सार्वजनिक स्थल
चुहाघर
हर जीव की रक्षा करे, चुहे को भी न मारे पकड़ कर यहां छोडे।
अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है।

आग्रह
सार्वजनिक स्थलो को सब मिलकर बचाये
इन पर कब्जा नही करे।
पक्षी, जानवर, पेड़ बीज सबकी रक्षा करे।
कम से कम 7 दिन श्रमदान करे।

हमारा पर्यावरण

गांव का वन

हमारा पर्यावरण

हमारा पर्यावरण

- जैव विविधता बढ़ी है व चारागाह में 34 प्रकार की घास आ रही है।
- दुर्लभ व लुप्त प्रायः पक्षी संरक्षित है।

एक गांव ने बचाए, बड़े कानों के उल्लू

प्रकृति और जीव-जन्तुओं को बचाने में जुटे ग्रामीण

विनोद सिंह चौहान

जयपुर, 26 दिसम्बर। नेचर से प्रेम करने वालों के लिए खास और खुश खबर! दूदू के पास एक गांव के लोगों के प्रकृति प्रेम ने नष्ट होती प्रकृति और जीव-जन्तुओं को नया जीवन दे दिया है। राजस्थान के लिए सबसे महत्वपूर्ण माने जा रहे ग्रेट होर्न्ड आऊल यानि बड़े कानों वाले उल्लू सहित दर्जनों पक्षी और वनस्पतियों का यहां संरक्षण किया जा रहा है। इससे उत्साहित वन विभाग ने इस गांव में वनस्पतियों और पशु-पक्षियों की जानकारी जुटाने और उन पर शोध का काम हाथ में लिया है।

दूदू से 15 किलोमीटर दक्षिण में बसे लापोड़िया गांव मे 20 वर्षों से जीवीएनएमएस संस्था गांव के लोगों को साथ लेकर भूमि सुधार और जल संरक्षण के कार्य में लगी है। जब संस्था ने प्रकृति संरक्षण का कार्य हाथ में लिया तो वन विभाग भी उसके साथ हो लिया। वन विभाग के आला अधिकारियों ने लापोड़िया के दौरे में पाया कि गांव के लोग वास्तव में प्रकृति संरक्षण में लगे हुए हैं। विभाग के प्रधान मुख्य वन संरक्षक अभिजीत घोष ने भी प्रकृति संरक्षण के लिए किए गए कार्यों की सराहना की है। विभाग ने अब इस क्षेत्र में दिखाई दे रहे पशु-पक्षियों और वनस्पतियों की जानकारी और शोध का कार्य हाथ में लिया है। विभाग ने पक्षी विशेषज्ञ सोहनलाल सैनी को वहां भेजा। दस दिन के पैदल भ्रमण और शोध से पता चला है कि यहां जैविक विविधता के कई घटक हैं, जिसमें करीब 84 प्रकार के पक्षी, 133 प्रकार की वनस्पतियां, 29 प्रकार की वनोषधियां, 14 प्रकार के स्तनधारी प्राणी, 10 प्रकार के रेंगने वाले जंतु और 16 प्रकार के कीट-पतंगों की पहचान की गई है। सैनी ने एक ही स्थान पर आठ बड़े कानों वाले उल्लू देखे, जो पहले राज्य में नहीं देखे गए।

गांव में पशु-पक्षी व कीट-पतंगे

स्तनधारी	रेंगने वाले जंतु	कीट-पतंगे
भेड़िया	दीमम छिपकली	ड्रेगन फ्लाई
गीदड़	भूरी छिपकली	गिरगिट
लंगूर	चट्टानी छिपकली	बगस, वीटल
बूच	पाटागोह	आंट, मोथ
नेवला	वामणी	सिकाड़ा
भौंर	धारिया वामणी	ग्रास होपर
लोमड़ी	दुमही	माइटस, स्पाइडर
भाऊ चूहा	धामण	स्क्रॉर्पियन
रोजड़ा	काला नाग	फायर फ्लाई

मेरे देश का गांव

मेरे देश का गांव

धरती जतन पदयात्रा

विचार गोष्टी

संकल्प

तालाब पुजन

मेरे देश का गांव

फूल सागर पर श्रमदान

पदयात्रा में पेड़ पुजन

श्रमदान के बीच चर्चा

गांव से गांव सिखते हुये

मेरे देश का गांव

गांव के तालाब में पुष्कर सरोवर का जल अर्पण करते हुये

विदेशियों को हिन्दुस्तानी तरिका सिखाते हुये

मेरे देश का गांव

अलग अलग पदयात्रा टोलियों का संगम व अनुभव बाटंना

संस्था का संक्षिप्त परिचय–विजन एवम् मिशन

विजन

ग्रामीण क्षेत्रो में जीवन की गुणवत्ता बढाने के लिए आजिविका को सुरक्षित करने और समुदाय को आत्म निर्भर बनाने के लिए स्थानीय पारिस्थितिकी तन्त्र को मजबूत बनाना।

मिशन

- गांव की गौचर भूमि और निजी कृषि भूमि के प्रबन्धन से भूमि की गुणवत्ता में सुधार करना।
- नवीन व विशिष्ट तकनीको व प्रणालियों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर सतही व भुमिगत जल का संरक्षण करना।
- देशी वृक्ष, झाडी, घास प्रजातियों के उत्थान से स्थानीय जैव विविधता को संरक्षित करना।
- ग्रामीण आजिविका को सुरक्षित करते हुए जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने के लिए फसल व पशुधन उत्पादन प्रणाली को सुदृढ करना।
- प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबन्धन के लिए स्थानीय प्रशासन को दक्ष व संवेदनशील बनाना तथा सकिय ग्राम संगठन खडे करना।
- ग्रामीण समुदायों के जीवन स्तर को उंचा करने के लिए सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा तक उनकी पहुच सुनिश्चित करना।

संस्था का सरकार के साथ जुड़ाव

- राज्य चारागाह व बंजर भूमि विकास बोर्ड के सदस्य व बोर्ड की वर्किंग कमेटी के सदस्य
- राजस्थान ओडिट एडवाईजरी बोर्ड (SAAB) के सदस्य
- PHED में IEC गतिविधी के लिय राज्य सरकार के पेनल में
- MJSA (IWMP) के लिय राज्य सरकार के साथ PIA के रूप में कार्य कर रहै है।

संस्था कार्यक्षेत्र

पश्चिमी राजस्थान में

बाडमेर – 99 गांव नागौर–398 गांव,

पाली – 11 गांव

मध्य व पूर्वी राजस्थान में

भीलवाडा –1485 गांव, जयपुर – 259 गांव, टोंक –1

गांव

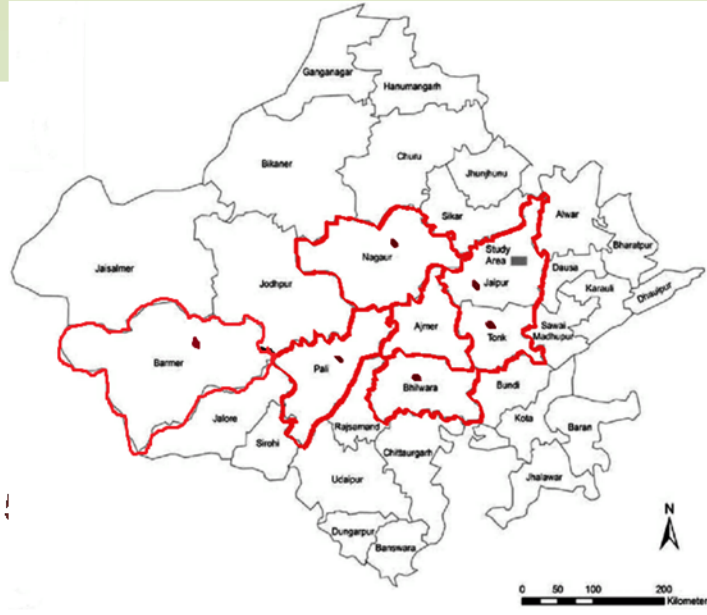

संस्था का संक्षिप्त परिचय

संस्था के काम को पहचान देते प्रमुख पुरस्कार

- राष्ट्रीय युवा पुरस्कार – 1992
- इन्दिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार – 1994
- ईको वोलिन्टियर के रूप में चयन यू एन डी पी द्वारा – 1996
- अशोका फेलोशिप – 1997
- राजा दुल्हे राय पुरस्कार – 2001
- राज्य भू एवं जल संरक्षण पुरस्कार – 2006
- राष्ट्रीय भू एवं जल संवर्धन पुरस्कार – 2007
- राज्य स्तरीय डालमिया पानी पर्यावरण पुरस्कार – 2008
- सिल्वर अवार्ड (धीरूभाई अम्बानी मेमोरियल ट्रस्ट) – 2008
- राजीव गांधी पर्यावरण पुरस्कार – 2013
- एक्वा फाउन्डेशन ऐक्सिलेन्स पुरस्कार 2016
- महारानी पद्मनी पुरस्कार (जौहर समृति संस्थान) 2016

संस्था का संक्षिप्त परिचय

अ. राजस्थान में लगभग 3150 गांवो के 6 लाख परिवारो के साथ काम है।

ब. सामुदायिक संगठनो के साथ कार्य

ग्राम विकास समितियां – 110

स्वयं सहायता समूह – 482

ग्रामीण जल स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समितियां – 2203

स. भू एवं जल संरक्षण एवं संवर्धन सरचनाओ का निर्माण

चरागाह विकास कार्य (चौका सिस्टम द्वारा) – 7540 हैक्टर

मेडबन्दी – 36,000 हैक्टर

तालाब (खुदाई गहरीकरण व नया निर्माण) संख्या में – 230

नाडा नाडी (सार्वजनिक व निजी) संख्या में – 1120

चैकडेम, एनीकट संख्या में – 38

कुल जमीन जहां पर वर्षा जल प्रबन्धन का काम हुआ – 53320 हेक्टर

पेयजल टांका संख्या में – 126

जंगल हॉल संख्या में – 2

धन्यवाद
पधारो म्हारे गांव – लापोडिया